नागकेसर

कदम्ब

(७) बांस – इसे गरीब की 'इमारती लकड़ी' कहते हैं।

(८) पीपल – अति पवित्र वृक्ष। भगवान बुद्ध को इसी वृक्ष के नीचे 'बोधि' प्राप्त हुई थी।

(९) नागकेसर – मुख्य रूप से आसाम के आर्द्र क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से उगने वाला वृक्ष। इसकी लकड़ी अत्यधिक कठोर होती है।

(१०) बरगद – वट सावित्री व्रत में हिन्दू महिलाओं द्वारा पूजा जाने वाला बहुत बड़ी छायादार प्रजाति।

(११) पलाश – सूखे व बंजर क्षेत्रों में उगने वाला मध्यम ऊँचाई का वृक्ष। फूल से होली पर खेलने वाले रंग बनाते हैं। इसे 'वन ज्वाला' (फ्लेम आफ द फारेस्ट) भी कहते हैं।

(१२) पाकड़ – घनी शीतल छाया देने के लिए प्रसिद्ध वृक्ष।

(१३) रीठा – मध्यम ऊँचाई का वृक्ष जिसका फल झाग देने के कारण धुलाई के कार्यों में प्रयुक्त होता है।

(१४) बेल – कठोर कवच के फल वाला मध्यम ऊँचाई का वृक्ष जिसकी पत्तियां शिवजी की पूजा में चढ़ाई जाती हैं।

(१५) अर्जुन – जलमग्न या ऊँचे जलस्तर वाले क्षेत्रों में आसानी से उगने वाला वृक्ष है। इसकी छाल हृदय रोग की श्रेष्ठतम औषधि है।

(१६) कंटारी – छोटी ऊँचाई के इस वृक्ष के कांटे बहुशाखित होते हैं, इसके फल त्रिदोषनाशक होते हैं।

(१७) मौलश्री – दक्षिण भारत में प्राकृतिक रूप से उगने वाला छायादार–शोभाकार वृक्ष।

(१८) चीड़ – ठन्डे पहाड़ी क्षेत्र में उगने वाली सुई जैसी पत्तियों वाला सीधी ऊँचाई में बढ़ने वाला वृक्ष जिसकी छाल पतली होती है।

(१९) साल – प्रदेश के तराई क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से उगने वाला अति महत्त्वपूर्ण प्रकाष्ठ वृक्ष।

(२०) वंजुल – बहते जल स्त्रोतों के किनारे उगने वाला छोटी ऊँचाई का वृक्ष।

(२१) कटहल – मध्यम ऊँचाई का वृक्ष जिसके बृहदाकार फल की सब्जी खाई जाती है।

(२२) आक – बंजर शुष्क भूमि पर उगने वाली झाड़ी जैसी प्रजाति।

(२३) शमी – छोटे कांटों वाला छोटी ऊँचाई का वृक्ष जिसे उ.प्र. में छ्योंकर व राजस्थान में खेजड़ी कहते हैं।

(२४) कदम्ब – भगवान कृष्ण की स्मृति से जुड़ा ऊँचा वृक्ष जो आर्द्र क्षेत्रों में आसानी से उगता है।

(२५) आम – भारत में फलों का राजा नाम से प्रख्यात है।

(२६) नीम – 'गाँव के वैद्य' नाम से प्रसिद्ध औषधीय महत्त्व का वृक्ष।

(२७) महुआ – शुष्क पथरीली व रेतीली भूमि में उगने वाला वृक्ष। गरीबों में उपयोगिता के कारण इसे 'गरीब का भोजन' नाम की उपमा दी जाती है।

उ.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड

पूर्वी विंग, तृतीय तल, ए ब्लाक, पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (उ०प्र०) 226010; फोन : 0522–4006746, 2306491 द्वारा प्रकाशित

वेबसाइट : upsbdb.org; **ईमेल :** upstatebiodiversityboard@gmail.com

आलेख एवं छाया चित्र : संजीव कुमार शर्मा, सहायक वन संरक्षक

मुद्रक : **शिवम् आर्ट्स**, 211, निशातगंज, लखनऊ; दूरभाष : 2782172, 2782348; email : shivamarts@sancharnet.in

नक्षत्र वाटिका

उ० प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड

नक्षत्र वाटिका

(नक्षत्र वृक्षों का रोपण)

जिस तरह पृथ्वी के धरातल को भूगोलविद ३६° की अक्षांश रेखाओं में चिन्हित करते हैं, उसी तरह प्राचीन काल में धरती के ऊपर आकाश को २७ बराबर भागों में बाँटा गया है। जिसके हर एक भाग को एक नक्षत्र कहतें हैं। इन नक्षत्रों की पहचान आसमान के तारों की स्थिति विन्यास से की जाती है। जिस तरह समुद्र में प्रवाहमान जहाज की स्थिति देशान्तर रेखा में व्यक्त की जाती है, उसी तरह पृथ्वी के नजदीक के पिण्डों (ग्रहों) की भ्रमण स्थिति नक्षत्रों में व्यक्त की जाती है, भारतीय मान्यता के सत्ताईस नक्षत्रों के नाम क्रम निम्न प्रकार हैं –

१. अश्विनी २. भरणी ३. कृत्तिका ४. रोहिणी ५. मृगशिरा ६.आर्द्रा ७. पुनर्वसु ८. पुष्य ९. आश्लेषा १०. मघा ११. पूर्वाफाल्गुनी १२. उत्तराफाल्गुनी १३. हस्त १४. चित्रा १५. स्वाती १६. विशाखा १७. अनुराधा १८. ज्येष्ठा १९. मूला २०. पूर्वा षाढ़ा २१. उत्तरा षाढ़ा २२. श्रवण २३. धनिष्ठा २४. शतभिषक् २५. पूर्वाभाद्रपद २६. उत्तरा भाद्र पद २७. रेवती । इन नक्षत्रों के वृक्षों का नाम आयुर्वेदिक, पौराणिक, ज्योतिषीय व तान्त्रिक ग्रन्थों में मिलता है, इन ग्रन्थों में यह वर्णन है कि अपने जन्म–नक्षत्र के वृक्ष की सेवा व वृद्धि करने से अपना कल्याण होता है और अपने जन्म नक्षत्र के वृक्ष को हानि या कष्ट पहुँचाने से अपनी हर प्रकार से बर्बादी होती है। विविध नक्षत्रों की वनस्पति की वैज्ञानिक पहचान यू.पी. फारेस्ट वेलफेयर आर्गेनाइजेशन लखनऊ द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'नक्षत्र वाटिका' में दी गयी है। यहां इन वृक्षों की सूची दी जा रही है।

क्र. सं.	*नक्षत्र नाम*	*पौराणिक नाम*	*वैज्ञानिक नाम*	*सामान्य नाम*
१.	अश्विनी	कारस्कर	*Strychnos nux-vomica*	कुचिला
२.	भरणी	धात्री	*Phyllanthus emblica*	आँवला
३.	कृत्तिका	उदुम्बर	*Ficus racemosa*	गूलर
४.	रोहिणी	जम्बू	*Syzygium cuminii*	जामुन
५.	मृगशिरा	खादिर	*Acacia catechu*	खैर
६.	आर्दा	कृष्ण	*Dalbergia sissoo*	शीशम
७.	पुनर्वसु	वंश	*Bamboo*	बांस
८.	पुष्य	अश्वत्थ	*Ficus religiosa*	पीपल
९.	आश्लेषा	नाग	*Mesua nagassarium*	नागकेसर

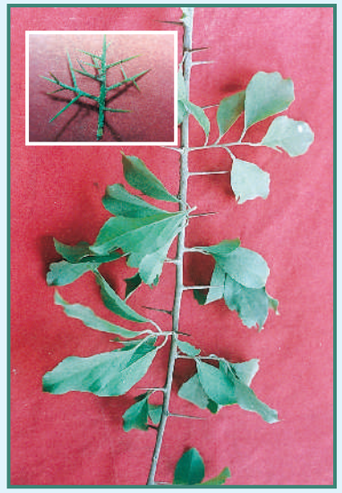

कंटारी

शमी

१०.	मघा	वट	*Ficus benghalensis*	बरगद
११.	पू. फाल्गुनी	पलाश	*Butea monosperma*	ढाक
१२.	उ. फाल्गुनी	प्लक्ष	*Ficus virens*	पाकड़
१३.	हस्त	अरिष्ट	*Sapindus mukorrossi Gaertn*	रीठा
१४.	चित्रा	बिल्व	*Aegle marmelos*	बेल
१५.	स्वाती	अर्जुन	*Terminalia arjuna*	अर्जुन
१६.	विशाख	विकंकत	*Flacourtia indica*	कटाई
१७.	अनुराधा	बकुल	*Mimusops elengi*	मौलश्री
१८.	ज्येष्ठा	सरल	*Pinus roxburghii Sarg.*	चीड़
१९.	मूला	सर्ज	*Shorea robusta*	साल
२०.	पूर्वाषाढ़ा	वंजुल	*Salix trtrasperma*	जलवेतस
२१.	उत्तराषाढ़ा	पनस	*Artocarpus heterophyllus*	कटहल
२२.	श्रवण	अर्क	*Calotropis procera*	मदार
२३.	धनिष्ठा	शमी	*Prosopis cineraria*	छयोंकर
२४.	शतभिषक	कदम्ब	*Anthocephalus chinensis*	कदम्ब
२५.	पू. भाद्रपद	आम्र	*Mangifera indica*	आम
२६.	उ. भाद्रपद	निम्ब	*Azadarichta indica*	नीम
२७.	रेवती	मधूक	*Madhuca indica*	महुआ

इन वृक्षों का रोपण एक वृत्त के रूप में वृत्त की परिधि को २७ बराबर भागों में बांट कर निम्न प्रकार किया जा सकता है।

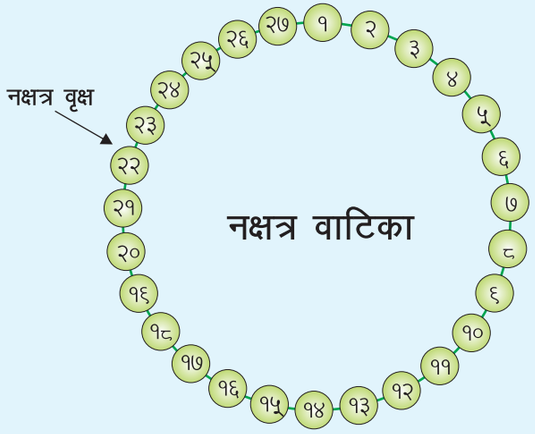

नक्षत्र वाटिका :

हर वृक्ष के नक्षत्र का चित्र व उस नक्षत्र कें स्वामी का नाम वृक्ष के नाम के साथ लिख कर प्रदर्शित किया जा सकता है।

नक्षत्रों के वृक्षों का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है :–

(१) कुचिला– मध्यम ऊँचाई का वृक्ष जो मध्य भारत के वनों में पाया जाता है। इसके टिकियानुमा बीजों में स्थित विष बहुत अधिक औषधीय महत्त्व का होता है।

(२) आंवला – इसके फल को अमृत फल कहा गया है जो विटामिन 'सी' का समृद्धतम् स्रोत है।

(३) गूलर – बड़े आकार का छायादार वृक्ष। शुक्र ग्रह की शान्ति में इसकी समिधा प्रयुक्त होती है।

(४) जामुन – बहते जल क्षेत्रों के नजदीक आसानी से उगने वाला वृक्ष। मधुमेह की क्षेष्ठतम औषधि।

(५) खैर – मध्यम ऊँचाई का कांटेदार वृक्ष। इसकी लकड़ी से कत्था बनता है।

(६) शीशम / तेंदू – आर्द्रा नक्षत्र हेतु वर्णित नक्षत्र वृक्ष शब्द 'कृष्ण' के अर्थ में दोनों वृक्ष आ जाते हैं।

शीशम– ऊँचे वृक्ष वाली महत्त्वपूर्ण काष्ठ प्रजाति।

तेंदू – काले तने वाला वृक्ष जिसकी पत्तियाँ बीड़ी बनाने के काम आती हैं।